ये 'परिक्रमा' बीजेपी को कहां ले जाएगी

-मनोज कुमार झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राजनीति अपना रंग दिखाने लगी है। दंगा भड़काने के पुराने तौर-तरीके आजमाये जाने लगे हैं। अभी-अभी इंदौर का ताजा दंगा इसका उदाहरण है। दंगे के बाद बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक वोटों का ध्रुवीकरण तेजी से होता है।

'इस साल दंगा बहुत बड़ा था
अच्छी होगी फ़सल मतदान की।'
-गोरख पांडेय

दंगों के बाद मतदान की फ़सल बहुत अच्छी होती है। ब्रिटिश काल से आजमाया हुआ नुस्खा है। भारतीय राजनीति को उपनिवेशवाद की बहुत बड़ी सौगात है। भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों ने इस नुस्खे से भरपूर लाभ उठाया है। अल्पसंख्यकों को डरा-धमकाकर रखने, उनके ख़िलाफ़ बहुसंख्यकों की भावनायें भड़काकर उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक महसूस कराने का दंगा एक खास ही औजार है। दूसरी तरफ, भयादोहन कर अल्पसंख्यकों को सुरक्षा के नाम पर, उनसे वोट लेने में भी उन दलों के लिये कारगर साबित होता है जो 'सेकुलरिज़्म' की राजनीति करते हैं। मुलायम सिंह यादव, नितीश कुमार, लालू प्रसाद, रामविलास पासवान जैसे नेता एक तरह से अल्पसंख्यक भयादोहन की ही राजनीति कर रहे हैं।

मोदी और ये सब एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संघ-भाजपा के उग्र हिंदूवाद से तथाकथित सेकुलर नेताओं को अपनी राजनीति चमकाने के लिए खाद-पानी मिलता है। दो दशक से ज़्यादा हो गए, जब बिहार में लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा को रोक लालू प्रसाद यादव मुसलमानों के मसीहा बन गए थे। और अभी फिलहाल, अयोध्या में चौरासी कोसी परिक्रमा को लेकर समाजवादी पार्टी प्रमुख मुलायम सिंह यादव ने विश्व हिंदू परिषद्

वोटो की फसल बोने में जुटे पाखंड़ी

नेताओं की पकड़-धकड़ का जो कार्यक्रम चलाया, उससे उनकी मुसलमान-समर्थक छवि में चार चांद लग गये हैं। लेकिन भाजपा को भी कम फ़ायदा नहीं है। इस बहाने अयोध्या में थोड़ी सरगर्मी हो गई। वैसे तो दिग्गज पंडे-पुरोहितों का ही मानना है कि यह चौरासी कोसी परिक्रमा का सही मुहूर्त नहीं था, पर इससे क्या, संघ और भाजपा को मौका चाहिए था अयोध्या में अपनी शक्ति के प्रदर्शन का, और वो काम हो गया। अयोध्या संघ और भाजपा के लिये मक्का से कम नहीं। संघ और विहिप के चौरासी कोस परिक्रमा के उपक्रम से ग़रीब मुसलमानों और हिंदुओं में भी दंगे का ख़ौफ छा गया। रामशिला-पूजन और बाबरी मस्जिद ध्वंस की स्मृति ताजा हो गई। मोदी-भाजपा का काम बन गया। और मुलायम सिंह एक बार फ़िर सुर्खरू हो गये। मौलाना तो पहले से ही कहे जा रहे हैं। इस तरह, हम देखते हैं, हिंदू, मुसलमान बड़े ही खास मोहरे हैं राजनीति की शतरंज के बिसात के। इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं।

'ईश्वर अल्ला तेरो नाम, सबको सम्मति दे भगवान।' गांधी जी की प्रार्थना में एक अजीब-सी निरीहता है। एक बेचारगी है। एक लाचारी-सी। ये क्यों पैदा हुई? यह अंग्रेजों की साम्प्रदायिक नीतियों से समझौते का परिणाम था।

राष्ट्रवादी नेतृत्व समझौता परस्त था। यह कहने के बावजूद कि पाकिस्तान उनकी लाश पे बनेगा, गांधी समझौते के लिए राजी हो गए। मोती लाल के जवाहर को राजगद्दी पर बैठाने का सवाल था। और कुछ कर भी नहीं सकते थे। नेहरू ने बड़ी ही चालाकी के साथ कांग्रेस पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था। आगे चल कर इंदिरा गांधी ने इस एकाधिकार को और भी मजबूती से कायम किया। आज कांग्रेस महज एक परिवार के नाम से जाना जाने वाला दल है। कांग्रेस ने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से साम्प्रदायिक राजनीति को बढ़ावा देने में भूमिका निभाई है। आजादी के बाद, अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक समीकरण कुछ ऐसे थे कि अपने आपको क्रांतिकारी कहने वाली कम्युनिस्ट पार्टी भी-नेहरू के साथ प्रग्रति और सामाजिक समरसता का संदेश देने लगी। 'वैष्णव जन तो ऐसे कहिए जो पीर पराई जाने रे।' यही बात राम मंदिर आंदोलन के प्रतिकार में भी उभरी-'कण-कण में व्यापे हैं राम, क्यों भड़काते हो दंगा लेकर उनका नाम।' यह वाम का स्वर था। धर्मनिरपेक्षता यानी सेकुलरज़िम की इनकी समझ कुछ ऐसी है। इस समझ से गैर-साम्प्रदायिक, धर्मनिरपेक्ष दृष्टि कैसे विकसित हो सकती है?

धर्मनिरपेक्षता का मतलब है-धर्म का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं, यह व्यक्ति की आस्था और विश्वास से जुड़ी चीज है। यह उसी समाज में चरितार्थ हो सकता था जहां यह क्रांतिकारी ऐतिहासिक नारा सामने आया था-**'भ्रष्ट गिरजे को नष्ट कर दो।' -(वाल्तेयर)**

उस समाज में धर्म के नाम पर भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। परिणामस्वरूप धर्मसुधार आंदोलन और पुनर्जागरण।

भ्रष्टाचार की चरम सीमा यहां भी थी। पुनर्जागरण की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। (भक्ति आंदोलन)। लेकिन उपनिवेशवाद बहुत बड़ा अवरोधक बनकर सामने आया। 1857 के महाविद्रोह के बाद अंग्रेजों ने सोच-समझकर यहां की धार्मिक बहुलता को देखते हुए संप्रदायवाद को अपना औजार बनाया। 1905 में मुस्लिम लीग का जन्म हुआ। लार्ड कर्जन ने कहा था-मेरी दो बीवियां हैं। एक हिंदू और दूसरी मुस्लिम। मैं मुस्लिम बीवी को ज़्यादा प्यार करता हूं। फ़िर सांप्रदायिक आधार पर बंगाल का बिभाजन। प्रतिकारस्वरूप स्वदेशी आंदोलन। परिणाम-विभाजन रहा। फ़िर मांटेग्यू-चेम्सफोर्द सुधार-अलग एलेक्ट्रोटेट। संप्रदायवाद का उभार। लखनऊ समझौता।

आगे चलकर पाकिस्तान की मांग। राष्ट्रवादी जिन्ना संप्रदायवादी। नेहरू और कांग्रेस का सर्वसत्तावाद। देश का विभाजन। अब तक के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी। फ़िर मोदी क्या है और ये भाजपा क्या है। ये तो प्यादे हैं। साम्राज्यवाद ने नया रूप अख्तियार किया है। ये उसके प्यादे हैं। और कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, जनता दल सभी के सभी प्यादे। देश बेचने के लिए हर वक़्त तैयार। टुकड़े-टुकड़े में कमीशनखोरी कर बेच रहे हैं। ये दल्ले। चुनाव इनकी आपसी जंग है।

जनता के सामने कोई विकल्प नहीं है। दल्ले आगे बढ़-बढ़ कर खम ठोक रहे हैं, जनता चुनने के लिए स्वतंत्र है, स्वतंत्र है किसी न किसी के द्वारा ठोक दिए जाने के लिए। मोदी और भाजपा ने शुरूआत की है चौरासी कोस से। देखना है ये परिक्रमा उन्हें कहा ले जाती है?

तुर्की-ब-तुर्की

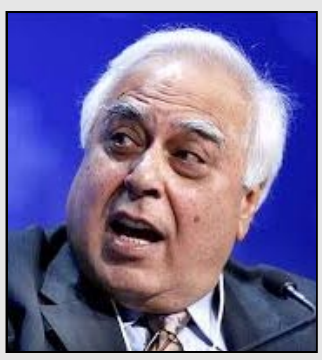

कपिल सिब्बल
केन्द्रीय मंत्री

''देश में यह आम धारणा बन चुकी है कि सारे नेता अपराधी हैं और अदालतें इसे साबित करने के मामले में उत्साह दिखा रही हैं, भले ही हम ऐसे नहीं हों।''

हमारा कहना है-

- देश में यह धारणा रातों-रात तो नहीं बनी। जब भारत आज़ाद हुआ था तो बरसों तक आम भारतीय राजनेताओं को पूजता था क्योंकि उन्होंने आज़ादी के लिये संघर्ष किया था और उनकी छवि भी साफ़-सुथरी होती थी। आज के नेताओं का संघर्ष पद और पैसे पर केन्द्रित है और उनकी जमात में अपराध में शामिल लोगों की भरमार है। ऐसे में यदि आम धारणा उन्हें अपराधी मानने की है तो उसमें गलत ही क्या है?
- आपकी टिप्पणी से लगता है कि आप स्वयं मान रहे हैं कि कुछ न कुछ अपराधी तत्व तो राजनीति में है ही। सवाल उठता है कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने, जिनमें आपकी पार्टी कांग्रेस भी शामिल है, उन तत्वों को पार्टी में रखा क्यों हुआ है और पकड़े जाने पर उन्हें बचाया क्यों जाता है? ऐसे में यदि अदालतें उत्साह न दिखायें तो क्या वे भी आप में ही शामिल हो जायें।
- आपको तो अदालतों का शुक्रगुज़ार होना चाहिये कि उन्होंने सीधे-सीधे आपराधिक मामलों के प्रति भी आखें बन्द कर रखी हैं। मसलन् सोनिया गांधी के दामाद राबर्ट वाड्रा का मामला मसलन रेलमन्त्री बंसल का मामला, मसलन् अम्बानियों, टाटाओं, ज़िदलों के मामले। यदि अदालतें इनमें उत्साह दिखायें तो आपकी पार्टी का उत्साह मिटने में ज़्यादा वक्त नहीं लगेगा।
- ज़रा विडम्बना देखिये कि जब सारा देश अदालतों की धीमी गति का रोना रो रहा है तो राजनेता उनके उत्साह को लेकर चिन्तित हैं। यानी जनता के हित राजनेताओं के हितों से भिन्न होते हैं। यही है हमारे देश का लोकतंत्र!

सुधी पाठकों से हमारा अनुरोध

'मज़दूर मोर्चा' को पढ़ने वाले सुधी पाठक भली-भांति समझते हैं कि यह एक पूर्णतया ग़ैरव्यवसायिक प्रयास है। आज की इस महंगाई के ज़माने में इसे नियमित निकालने की कठिनाइयों का अनुमान लगाना भी सुधी पाठकों के लिये कठिन नहीं होगा। इन कठिन परिस्थितियों में 'मज़दूर मोर्चा' को नियमित बनाये रखने के अलावा इसकी गुणवत्ता को और बढाने के लिये अनुरोध है कि डाक से प्राप्त करने वाले पाठक वार्षिक 100/-रुपया अथवा आजीवन 1000/- रुपया की सहयोग राशि 'मज़दूर मोर्चा' को भेजने की व्यवस्था करें। सहयोग राशि 'मज़दूर मोर्चा' कार्यालय 1डी/2 बी पी (हार्डवेयर चौक) एनआईटी फ़रीदाबाद के पते पर बजरिया मनीआर्डर अथवा चेक भेजी जा सकती है। इसके अलावा यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया की किसी भी शहर की किसी भी ब्रांच में मज़दूर मोर्चा के खाता संख्या 451102010004150 में सीधे भी रकम डाली जा सकती है।

ज़िला फ़रीदाबाद व पलवल के पाठक अपने हॉकर से प्राप्त कर सकते हैं। पाठकों से यह भी अनुरोध है कि 'मज़दूर मोर्चा' पढने के बाद अपनी टिप्पणियां, आपत्तियां, सुझाव इत्यदि साधारण डाक, ई मेल अथवा 9999595632 पर एसएमएस के द्वारा अवश्य भेजें। यह लेखन एवं सामग्री चयन में काफ़ी उपयोगी सिद्ध होगा।

-संपादक मंडल

छापते नहीं, छुपाते हैं

एक बार नारद मुनि परानुग्रह की आकांक्षा से मर्त्यलोक के भ्रमण पर निकले। सुबह-सुबह जिसे देखा, हाथ में बड़े-बड़े कागज लिये अपना चेहरा उसमें छिपाये हुए है। पूछा-'यह कौन सा पुरान है, वत्स?'

'महाराज यह अखबार है। कलयुग है, यहां पुराण-कुरान नहीं, अखबार ही सबसे पवित्र है।'

'इसमें किस प्रकार के वचन और सूक्त होते हैं?'

'आप ही जैसा काम अख़बार वाले भी करते हैं, यहां की बात वहां। अंतर बस इतना है कि इनके स्वामीगण समझदार हैं, मितभाषी हैं, आपकी तरह वाचाल नहीं। ये जितना छापते नहीं उससे ज़्यादा छुपाते हैं।'

'स्वामीगण अपने भोजन-वस्त्रादि के लिये धन कहां से प्राप्त करते हैं? क्या इनकी बिक्री से धनार्जन करते हैं?'

'नहीं महाराज' अख़बार तो शौकिया निकालते हैं, धनार्जन चीटफंडम, रियलइस्टेट, शेयरबाजारम अथवा अन्य व्यवसायों से प्राप्त करते हैं।

नारद जी का मष्तिष्क चक्कर खाने लगा। वे नारायण-नारायण कहते इस स्वानुभूत सत्य की मीमांसा करने ओर स्वर्गलोक में यह नया सन्देश पहुंचाने चल पड़े।